एकोनविंशति पाठः
सूक्तयः

(1) सुखस्य मूलं धर्मः।

अर्थ – धर्म सुख का मूल (जड़) है।

(2) दया धर्मस्य जन्मभूमिः।

अर्थ – दया धर्म की जन्मभूमि (जन्मस्थान) है।

(3) मूर्खेषु विवादः न कर्तव्यः।

अर्थ – मूर्खों के साथ विवाद नहीं करना चाहिए।

(4) परद्रव्यं न हर्तव्यम्।

अर्थ – दूसरों के धन का हरण नहीं करना चाहिए।

(5) नास्ति सत्यात् परं तपः।

अर्थ – सत्य से बढ़कर दूसरा कोई तप (तपस्या) नहीं है।

(6) सत्यं स्वर्गस्य साधनम्।

अर्थ – सत्य ही स्वर्ग प्राप्ति का साधन है।

(7) यशः शरीरं न विनश्यति।

अर्थ – यश (कीर्ति) रूपी शरीर कभी नष्ट नहीं होता (अर्थात् शरीर के नष्ट होने पर भी कीर्ति कभी नष्ट नहीं होती)।

(8) न दिवा स्वप्नं कुर्यात्।

अर्थ – दिवा (दिन) में स्वप्न नहीं देखना चाहिए अर्थात् (केवल कल्पना लोक में भ्रमण नहीं करना चाहिए)।

(9) नास्त्यहंकारसमः शत्रुः।

अर्थ – अहंकार के समान दूसरा कोई शत्रु नहीं है।

(10) न संसारभयं ज्ञानवताम्।

अर्थ – ज्ञानियों के लिए कोई सांसारिक भय नहीं है।

शब्दार्थाः

सुखस्य = सुख का। मूलम् = जड़। धर्मस्य = धर्म का। जन्मभूमिः = जन्म स्थान। हर्तव्यम् = हरण करना (चुराना)। तपः = तपस्या। स्वर्गस्य = स्वर्ग का। विनश्यति = नष्ट होता है। कुर्यात् = करना चाहिए। ज्ञानवताम् = ज्ञानियों के लिए। अहंकारसमः = अहंकार के समान।

अभ्यासः

प्रश्न 1. निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(क) सत्यं .... साधनम्।
(ख) दया .... जन्मभूमिः।
(ग) मूर्खेषु .... कर्त्तव्यः।
(घ) यशः .... विनश्यति।

प्रश्न 2. हिन्दी में अर्थ लिखिए –

(क) परद्रव्यं न हर्तव्यम्।
(ख) न संसारभयं ज्ञानवताम्।
(ग) नास्ति सत्यात् परं तपः।
(घ) सुखस्य मूलं धर्मः।

Q7A4NU

प्रश्न 3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

(क) दया धर्म है।
(ख) सत्य के समान कोई तप नहीं है।
(ग) सत्य ही स्वर्ग है।
(घ) अहंकार के समान शत्रु नहीं है।
(ङ) ज्ञानी को भय नहीं होता।

प्रश्न 4. "विनश्" धातु का लट्लकार एवं लृट्लकार परस्मैपद में चलाइए।